कामचोर

–इस्मत चुगताई

बड़ी देर के वाद–विवाद के बाद यह तय हुआ कि सचमुच नौकरों को निकाल दिया जाए। आखिर, ये मोटे–मोटे बच्चे किस काम के हैं! हिलकर पानी नहीं पीते। इन्हें अपना काम खुद करने की आदत होनी चाहिए। कामचारे कहीं के!

"तुम लोग कुछ नहीं। इतने सारे हो और सारा दिन ऊधम मचाने के सिवा कुछ नहीं करते।"

और सचमुच हमें ख्याल आया कि हम आखिर काम क्यों नहीं करते? हिलकर पानी पीने में अपना क्या खर्च होता है? इसलिए हमने तुरंत हिल–हिलाकर पानी पीना शुरू किया।

हिलने के धक्के भी लग जाते हैं और हम किसी के दबैल तो थे नहीं कि कोई धक्का दे, तो सह जाएं। लीजिए, पानी के मटकों के पास ही घमासान युद्ध हो गया। सुराहियां उधर लुढ़कीं। मटके इधर गए। कपड़े भीगे, सो अलग।

'यह भला काम करेंगे। गधे कहीं के,' अम्मा ने निश्चय किया।

"करंगे कैसे नहीं! इनके तो बाप भी करेगे। देखो जी! जो काम नहीं करेगा, उसे रात का खाना हरगिज नहीं मिलेगा। समझे।"

यह लीजिए, बिल्कुल शाही फरमान जारी हो रहे हैं।

"हम काम करने को तैयार है। काम बताए जाए," हमने दुहाई दी।

"बहुत से काम हैं जो तुम कर सकते हो। मिसाल के लिए, यह दरी कितनी मैला हो रही है। आंगन में कितना कूड़ा पड़ा है। पेड़ों में पानी देना है और भाई मुफ्त तो यह काम करवाए नहीं जाएंगे। तुम सबको तनख्वाह भी मिलेगी।" अब्बा मियां ने कुछ काम बताए और दूसरे कामों का हवाला भी दिया–माली को तनख्वाह मिलती है। अगर सब बच्चे मिलकर पाना डालें, तों।

'ए हे! खुदा के लिए नहीं। घर में बाढ़ आ जाएगी।' अम्मा ने याचना की। फिर तनख्वा हके सपने देखते हुए हम लोग काम पर तुल गए।

एक दिन फर्शी दरी पर बहुत–से बच्चे जुट गए और चारों ओर से कोने पकड़कर झटकना शुरू किया। दो–चार ने लकड़ियां लेकर धुआंधार पिटाई शुरू कर दी।

"ए! तुम पर खुदा की मार! झाड़ू फिरे तुम्हारी सूरतों पर।" सारा घर धूल से अट गयां खांसते–खांसते सब बेदम हो गए। सारी धूल, जो दरी पर थी, जो फर्श पर थी, सबके सिरों पर जम गई। नाकों और आंखों में घुस गई। बुरा हाल हो गया सबका। मार–मारकर हम लोगों को आंगन में निकाला गया। वहां हम लोगों ने फौरन झाड़ू देने का फैसला किया।

झाड़ू क्योंकि एक थी और तनख्वाह लेने वाले उम्मीदवार बहुत, इसलिए क्षण भर में झाड़ू के पुर्जे उड़ गए। जितनी सींके जिसके हाथ पड़ीं, वह उन से ही उलटे–सीधे हाथ मारने लगा। जमीन कम और एक दूसरे की टांगें ज्यादा झाड़ी गई। नतीजा यह कि सींकें चलीं। आंखें फूटते–फूटते बचीं। अम्मा ने सिर पीट लिया। भई, ये बुजुर्ग काम करने दें तो इन्सान काम करे। जब जरा–जरा सी बात पर थप्पड़ों की बारिश होने लगे तो बस, हो चुका काम!

असल में झाड़ू देने से पहले जरा– सा पानी छिड़क लेना चाहिए। बस, यह ख्याल आते ही तुरंत दरी पर पानी छिड़का गया। एक तो वैसे ही धूल से अटी हुई थी। पानी पड़ते ही सारी धूल कीचड़ बन गई

अब सब मजदूर आंगन से भी मार–मार कर निकाले गए। तय हुआ कि पेड़ों को पानी दिया जाए। बस, सारे घर की बाल्टियां, लोटे, तसले, भगोने, पतीलियां लूट ली गई। जिन्हें ये चीजें भी न मिलीं, वे डोंगे–कटोरे और गिलास ही ले भागे।

अब सब लोग नल पर टूट पड़े। यहां भी वह अमासान मची कि क्या मजाल जो एक बूंद पानी भी किसी के बरतन में आ सके। ठूमस–ठास! थ्कसी बाल्टी पर पतीला और पतीले पर लोटा और भगोने और डोंगे। पहले तो धक्के चले। फिर कुहनियां और उसके बाद बरतनों से ही एक–दूसरे पर हमला कर दिया गया। स्पष्ट है कि भारी बरतन वाले तो हथियार उठाते रहे गए। कटोरों और डोंगों वाली फौज ने गोमड़े डाल दिए सिरों पर। फौरन बड़े भाइयों, बहनों, मामुओं और दमदार मौसियों, फूफियों की कुसम भेजी गई, जिन्होंने पतली–पतली नीम की छड़ियों से ऐसे सड़ाकें लगाए कि फौज मैदान में हथियार फेंककर पीठ दिखा गई।

इस धींगामुश्ती में कुछ बच्चे कीचड में लथपथ हो गए, जिन्हें नहलाकर कपड़े बदलवाने के लिए नौकरों की वर्तमान संख्या काफी नहीं थी। पास के बंगलों से नौकर आए और चार आना प्रति बच्चा के हिसाब से नहलवाए गए।

हम लोग कायल हो गए कि सचमुच यह सफाई का काम अपने बस की बात नहीं और न पेड़ों की दरवभाल हमसे हो सकती है। कम से कम मुर्गियां ही बंद कर दें।

बस, शाम ही से जो बांस, छड़ी हाथ पड़ी, लेकर मुर्गियां हांकने लगे। 'चल दड़बे, दड़बे।'

पर साहब, मुर्गियों को भी किसी ने हमारे विरुद्ध भड़का रखा था। ऊट–पटांग इधर–उधर कूदने लगीं। दो मुर्गियां खीर के प्यालों से, जिन पर आया चांदी के वर्क लगा रही थी, दौड़ती–फडफड़ाती हुई निकल गई

तूफान गुजरने के बाद पता चला कि प्याले खाली हैं और सारी खीर दीदी के कामदानी के दुपटअें और ताजे धुले सिर पर लगी हुई है। एक बड़ा–सा मुर्गा अम्मा के खुले हुए पानदान में कूद पड़ा और कत्थे–चूने में लुथड़े हुए पंजे लेकर नानी अम्मा की सफेद दूध जैसी चादर पर छापे मारता हुआ निकल गया।

एक मुर्गी दाल की पतीली में छपाका मारकर भागी और सीधी जाकर मोरी में इस तेजी से फिसली कि सारी कीचड़ मौसीजी के मुंह पर पड़ी जो बैठी हुई हाथ–मुंह धो रही थीं। इधर सारी मुर्गियां बेनकेल का ऊंट बनी चारों तरफ दौड़ रही थीं।

एक भी दड़बे में जाने को राजी न थी।

इधर, किसी की सूझी की बकरीद–ईद के लिए जो भेड़ें आई हुई हैं, लगे हाथों उन्हें भी दाना खिला दिया जाए।

दिन–भर की भूखी भेड़े दाने का सूप देखकर जो सबकी सब झपटीं तो भागकर जाना कठिन हो गया। लश्टम–पश्टम तख्तों पर चढ़ गईं। पर भेड़–चाल मशहूर है। उनकी नजर तो बस, दाने के सूप पर जीम हुई थी। पलंगों को फलांगती, बरतन लुढ़काती साथ–साथ चढ़ गईं।

तख्त पर बानी दीदी के देहत का दुपट्टा फैला हुआ था, जिस पर गोखरी, चम्पा और सलमा–सितारे रखकर बड़ी दीदी मुगलानी बुआ को कुछ बता रही थी। भेड़ें बहुत निःसंकोच सबो रौंदती, मेंगनों का छिड़काव करती हुई दौड़ गईं।

जब तूफान गुजर चुका, तो ऐसा लगा जैसे जर्मनी की सेना टैंकों और बमबारा सहित उधर से छापा मारकर गुजर गई हो। जहां–जहां से सूप गुजरा, भेडें शिकारी कुत्तों की तरह गंध सूंघती हुई हमला करती गईं।

हज्जन मां एक पलंग पर दुपट्टे से मुंह ढांके सो रही थी। उन पर से जो भेड़ें दौड़ीं तो न जाने वह सपने में किन महलों की सैर कर रही थीं, दुपट्टे में उलझी हुई 'मारो–मारो' चीखने लगीं।

इतनें में भेड़ें सूप को भूलकर तरकारी वाली की टोकरी पर टूट पड़ीं। वह दालान में बैठी मटर की फलियां तोल-तोल कर रसोइए को दे रही थी। वह अपनी तरकारी का बचाव करने के लिए सीना तान कर उठ गई। आपन कभी भेड़ों को मारा होगा, तो अच्छी तरह देखा होगा कि बस, ऐसा लगता है, जैसे रूई के तकिये को कूट रहे हों। भेड़ को चोट ही नहीं लगती। बिल्कुल यह समझकर कि आप उससे मजाक कर रहे हैं, वह आप ही पर चढ़ बैठेगी। जरा-सी देर में भेड़ों ने तरकारी छिलकों समते अपने पेट की कड़ाही में झौंक दी।

इधर यह प्रलय मची थी, उधर दूसरे बच्चे भी लापरवाह नहीं थे। इतनी बड़ी फौज थी-जिसे रात का खाना न मिलने की धमकी मिल चुकी थी। वे चार भैंसों का दूध दुहने पर जुट गए। धुली-बेधुली बालटी लेकर आठ हाथ चार थनों पर पिल पड़। भैंस एकदम जैसे चारों पैर जोड़कर उठी और बालटी को लात मारकर दूर जा खड़ी हुई।

तय हुआ कि भैंस की अगाड़ी-पिछाड़ी बांध दी जाए और फिर काबू में लाकर दूध दुह लिया जाए। बस, झूले की रस्सी उतारकर भैंस के पैर बांध दिए गए। पिछले दो पैर चाचाजी की चारपाई के पायों से बांध, अगले दो पैरों को बांधने की कोशिश जारी थी कि भैंस चौकन्नी हो गई। छूटकर जो भागी तो पहले चाचाजी समझे कि शायद कोई सपना देख रहे हैं। फिर जब चारपाई पानी के ड्रम से टकराई और पानी छलककर गिरा तो समझे कि आंधी तूफान में फंसे हैं साथ में भूचाल भी आया हुआ है। फिर जल्दी ही उन्हें असली बात का पता चल गया और वह पलंग की दोनो पटियां पकड़े बच्चों को सांड की तरह छोड़ देने वालों को बुरा-भला सुनाने लगे।

यहां बड़ा मजा आ रहा था। भैंस भागी जा रही थी और पीछे-पीछे चारपाई और उस पर बिल्कुल राजा इन्द्र की तरह बैठे हुए थे चाचाजी।

ओहो! एक भूल ही हो गई यानि बछड़ा तो खोला ही नहीं, इसलिए तत्काल बछड़ा भी खोल दिया गया।

तीर निशाने पर बैठा और बछड़े की ममता में व्याकुल होकर भैंस ने अपने खुरों को ब्रेक लगा दिए। बछड़ा तत्काल जुट गया। दुहने वाले गिलास-कटोरे लेकर लपके क्यों बाल्टी तो छपाक से गोबर में जा गिरी थी। बछड़ा फिर बागी हो गया।

कुछ दूध जमीन पर और कपड़ों पर गिरा। दो-चार धारें गिलास-कटोरों पर भी पड़ गई बाकी बछड़ा पी गया। यह सब कुछ कुछ मिनट के तीन-चौथाइ में हो गया।

घर में तूफान उठ खड़ा हुआ। ऐसा लगता था, जैसे सारे घर में मुर्गियां, भेड़ें, टूटे हुए तसले, बालटियां, लोटे, कटोरे और बच्चे थे। बच्चे बाहर किए गए। मुर्गियां बाग में हंकाई गई। मातम-सा मनाती तरकारी वाली के आंसू पौंदे गए और अम्मा आगरा जाने के लिए सामान बांधने लगी।

"या तो बच्चा-राज कायम कर लो या मुझे ही रख लो। नहीं तो मैं चली मायके," अम्मा ने चुनौती दे दी, "मुए बच्चे हैं कि लुटेरे...।"

और अब्बा ने सबको कतार में खड़ा करके पूरी बटालियन का कोर्ट मार्शल कर दिया। "अगर किसी बच्चें ने घर की किसी चीज को हाथ लगाया तो बस, रात का खाना बंद हो जाएगा।"

ये लीजिए! इन बुजुर्गो को किसी करवट शांति नहीं। हम लोगों ने भी निश्चय कर लिया कि अब चाहे कुछ भी हो जाए, हिलकर पानी भी नहीं पिएंगे।